B.A. Part I - हिन्दी रचना

कुमारी चम्पा
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज आरा

सूरदास की भक्ति भावना पर प्रकाश डालें।

सूरदास भक्तिकाल के सगुण काव्यधारा के कृष्ण भक्त कवि हैं। सूरदास की भक्ति भावना का मेरुदंड पुष्टिमार्ग का सिद्धांत भगवतानुग्रह है। इसी को आधार मानकर वे वात्सल्य, सख्य और माधुर्य भाव की नाना पद्धतियों में भाव व्यंजना में लीन रहे हैं। ये वल्लभाचार्य के शिष्य थे तथा अष्टछाप के कवियों में सर्वप्रमुख थे। वल्लभाचार्य के पुष्टिमार्ग में दीक्षित होने से पहले सूरदास एक 'संत' थे जो सभी उपासना पद्धतियों, भक्तिप्रणालियों को समान भाव से देखते थे। पुष्टि मार्ग में आने से पूर्व सूर पर किसी विशेष भक्ति संप्रदाय का प्रभाव न था। उनमें ईश्वर भक्ति के प्रति अनन्यता दिखायी देती है।

"मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै।
जैसे उड़ि जहाज को पंछी पुनि जहाज पै आवै॥"

पुष्टिमार्ग में दीक्षित होने के पूर्व वे विनय के पदों की रचना किया करते थे। उनके कुछ पद ऐसे भी हैं जिनमें निर्गुण साधना पद्धति का संकेत मिलता है —

"नैनानि निरखि स्याम स्वरूप
रह्यो घट घट व्यापि सोई जोति रूप अनूप।"

ऐसे पदों में सूर ने ब्रह्मज्ञानियों के समान माया का वर्णन किया है।

ईश्वर देव में दृढ़ विश्वास उनका गुणगान सर्वस्व अर्पण की भावना, दैन्य निरूपण भी सूर के काव्य में विस्तार से उपलब्ध होता है। उनके प्रारंभिक पद विनय, वैराग्य, आन्तरिक साधना, गुरु का महत्व, आदि से सम्बन्धित है, किन्तु पुष्टि मार्ग में दीक्षित

होने के उपरान्त जो पद इन्होंने रचे वे प्रेमलक्षणा भक्ति से सम्बन्धित है। श्रीमद्भागवत के द्वितीय स्कंध के दशम अध्याय के अंतर्गत 'पुष्टि' को परिभाषित करते हुए कहा गया है- "पोषणं तदनुग्रहः" अर्थात ईश्वर का अनुग्रह ही पोषण है। भगवत्कृपा से ही भक्त के हृदय में भगवान के प्रति प्रेमलक्षणा भक्ति जाग्रत होती है। पुष्टि मार्ग में तीन प्रकार के जीव माने गए हैं -

1. पुष्टि जीव - जो भगवान के अनुग्रह पर विश्वास करते हैं और उनकी 'नित्यलीला' में प्रवेश पाते हैं।
2. मर्यादा जीव - जो वेद विहित मार्ग का अनुसरण कर स्वर्ग प्राप्त करते हैं।
3. प्रवाह जीव - जो संसार के प्रवाह में पड़कर सांसारिक सुखों में लीन रहते हैं। इन तीनों में पुष्टि जीव ही सर्वोपरि है।

सूरदास ने प्रेम की भक्ति का प्रतिपादन करते हुए भक्त की विकलता, अभिलाषा एवं विवशता का सुन्दर चित्रण किया है। सूरदास की भक्ति 'सख्य भाव' की है जिसमें भगवान के साथ भक्त का सखा भाव रहता है। ग्वाल-बालों का भी श्री कृष्ण के प्रति सखा भाव ही है जैसे -

"खेलत में को काको गुसैंया
हरि हारे जीते श्रीदामा बरबस ही कत करत रिसैंया"

सूरदास ने पुष्टिमार्गीय सेवा भाव को अपनाते हुए भक्ति के तीनों रूप - गुरु सेवा, सन्त सेवा तथा प्रभु सेवा - को अपनी भक्ति भावना में स्थान दिया है। पुष्टिमार्ग में नित्य सेवा विधि एवं वार्षिकोत्सव सेवा विधि का विशेष

महत्व है। पुष्टि मार्ग में तीन आसक्तियाँ बतायी गयी है - (1) स्वरूपासक्ति (2) लीलासक्ति (3) भावासक्ति सूरदास ने लीलासक्ति को अपनाते हुए भगवान कृष्ण की लीलाओं का गान अपने पदों में किया है।

सूरदास ने सख्य भाव की भक्ति को अपनाते हुए भी कृष्ण के प्रति नन्द-यशोदा के वात्सल्य भाव की तथा राधा एवं गोपियों के दाम्पत्य एवं माधुर्य भाव की सुन्दर व्यंजना की है। गोपी लीला के अंतर्गत कृष्ण एवं गोपियों के जिस प्रेम का चित्रण सूरदास ने किया है उसमें उनकी भक्ति भावना पराकाष्ठा पर पहुँची दिखायी पड़ती है।

भक्ति के दार्शनिक स्वरूप का ध्यान रखते हुए सूरदास ने वल्लभाचार्य के 'शुद्धाद्वैतवाद' की मान्यताओं को ग्रहण किया है। जीव को ब्रह्म का अंश मानते हुए वे इन दोनों का अद्वैत संबंध स्वीकार करते हैं। जीव की दुखदशा माया के कारण होती है। यदि माया का प्रपंच न हो तो जीव शुद्ध एवं अविकारी है।

सूरदास भक्ति के क्षेत्र में इतने आगे निकल गए कि समाज की आवश्यकताओं का उन्हें ध्यान नहीं रहा। वे पहले भक्त हैं और बाद में कवि। शुद्ध लीलावादी कवि होने के नाते कला कला के लिए सिद्धांत के तर्ज पर उनका काव्य स्वान्तः सुखाय है। लीला का प्रयोजन लीला ही है। सूर में तुलसी की भाँति लोकसंग्रह भावना नहीं मिलती है। वस्तुतः वे कृष्ण के रंग में इतना लीन हो गए थे कि समाज चाहे नष्ट हो जाए या रहे

उन्हें कोई परवाह नहीं थी। वे सांसारिक प्रलोभनों से दूर थे। यहाँ तक कि कृष्ण के समक्ष भी उन्हें कोई प्रलोभन नहीं था।

सूर ने गोपियों के माध्यम से माधुर्य भाव के भक्ति की अभिव्यंजना की है। सूर द्वारा वर्णित गोपी कृष्ण प्रेम में ऐन्द्रियता नहीं बल्कि हृदय की पवित्रता, उदारता अनन्यता और सर्वात्व समर्पण है। उसमें किसी प्रकार की संकीर्णता नहीं है। सूरदास ने माधुर्य भाव की भक्ति के द्वारा स्वयं भी कृष्ण रस का घुलकर पान किया है और ब्रजवासियों को भी उस रस में आप्लावित किया है।

सारतः कहा जा सकता है कि सूरदास ने कृष्ण की भक्ति कृष्ण को सखा मानकर किया है एवं सूर ने 'सायुज्य भक्ति' को महत्व दिया है जिसमें जीव ईश्वर के साथ एकीभाव को प्राप्त हो जाता है।